

## मुसम्मन बुर्ज (शाह बुर्ज) और झरोखा (1632-40 ई०)

यह सुन्दर महल नदी की तरफ, पूर्व की ओर उन्मुख, आगरे के किले की सबसे बड़ी अड्डालिका के ऊपर बना है। इसे मूल रूप से झरोखा दर्शन के लिये अकबर ने लाल पत्थर का बनवाया था। वह प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्योपासना भी यहीं से करता था। जहाँगीर ने भी झरोखे की तरह इसका उपयोग किया, जैसा 1620 ई० में बने उसके एक चित्र में स्पष्ट प्रदर्शित हुआ है। उसने इसके दक्षिण की तरफ ही अपनी 'अदल-ए-जंजीर' (न्याय की जंजीर) भी लगाई थी। अष्ट्रास होने के कारण ही इसे मुसम्मन-बुर्ज कहा जाता था। फारसी इतिहास वृत्तों और विदेशी यात्री वृत्तान्तों में इसका उल्लेख शाह-बुर्ज (शाही-बुर्ज या बादशाही बुर्ज) के नाम से भी हुआ है और इसे 'जस्मिन टॉवर' या 'सम्मन बुर्ज' कहना अनैतहासिक और गलत है। जैसा तत्कालीन इतिहासकार लाहौरी ने लिखा है शाहजहाँ ने श्वेत संगमरमर से 1632-40 के मध्य, इसका पुननिर्माण कराया। उसने भी इसका उपयोग झरोखा दर्शन के लिये किया। यह दृष्टव्य है कि दरबार की तरह ही यह भी एक अत्यावश्यक मुगल संस्थान था।

यह एक अष्ट्रास इमारत है, जिसकी पाँच बाह्य भुजाएँ, ढालान के रूप में नदी की ओर निकली हुई हैं। प्रत्येक भुजा खम्भों और तोड़ों द्वारा खुलती है। ठीक पूर्व की भुजा कुछ और आगे निकली हुई है और इसी पर शाही झरोखा बना हुआ है। इस महल के पश्चिमी ओर एक विस्तीर्ण ढालान है, जिसमें शाहनशी बने हैं। इसके फर्श में एक कुण्ड बना हुआ है। इसमें पच्चीकारी द्वारा अलंकरण हुआ है। इस ढालान के बाद एक आंगन है, जिसके उत्तर में एक जालीदार चबूतरा है। पश्चिम में शीशमहल तक क्रमशः कमरों की श्रृंखला है और दक्षिण में एक कक्ष सहित खम्भोंदार ढालान है। इस प्रकार यह एक बड़ा परिसर है जो पूर्णतया श्वेत संगमरमर का बना है। दीवारों में गहरे आलय बने हैं, जिससे वे खाली और सूनी न लगे। हजारों के हाशियों पर शैलीकृत बेलें पच्चीकारी द्वारा जड़ी गयी हैं और उनके मध्य में प्राकृतिक बूटे नक्काशी द्वारा उकेरे गये हैं। खम्भों, तोड़ों और सिरदलों पर पच्चीकारी द्वारा अत्यन्त उत्कृष्ट रूपांकनों से अलंकरण हुआ है और यह महल शाहजहाँ की सर्वाधिक अलंकृत इमारतों में से है। यह दीवान-ए-खास, शीश-महल, खास-महल और अन्य महलों से सीधा जुड़ा हुआ था और यहीं से मुगल सम्राट सारे देश का प्रशासन चलाता था। इस बुर्ज से ताजमहल का पूर्ण दृश्य दिखाई देता है और शाहजहाँ ने अपने बन्दी जीवन (1658-66 ई०) के आठ वर्ष यहीं बिताये और यहीं उसकी मृत्यु हुई। उसके पार्थिव शरीर को नाव द्वारा ताजमहल ले जाया गया और दफन कर दिया गया।



## MUTHAMMAN BURJ (SHAH-BURJ & JHAROKHA (1632-40 A.D.))

This beautiful palace surmounts the largest bastion of Agra Fort on the riverside, facing the east. It was originally built of red stone by Akbar who used it for Jharokha Darshan. As well as for sun worship, every day at sun rise. Jehangir also used it as Jharokha, as is faithfully shown in his painting made in 1620. He also instituted his 'Adl-I-Zanjir' (The Chain of Justice) on its southside. Owing to its octagonal plan, it was called 'Muthamman-Burj'. It has also been mentioned as 'Shah-Burj' the Imperial or King's Tower by Persian Historians and Foreign Travellers and it is a misnomer to call it 'Jasmine Tower' or 'Samman Burj'. As recorded by the contemporary Historian Lahauri. It was rebuilt with white marble by Shahjehan around 1632-40. He also used it for Jharokha Darshan which was an indispensable a Mughal institution as was 'Durbar'.

It is an octagonal building, five external sides of which, making a Dalan overlook the river. Each side has pillars and brackets openings. The eastern-most side projects forward and accommodates a Jharokha majestically on the western side of this palace is a spacious dalan with Shah-Nashin (Alcoves). A shallow water basin (Kunda) is sunk in its pavement. It is decorously inlaid. This dalan opens on a court which has a chabutara projected by a jali screen, on its northern side; series of rooms leading to Shish Mahal on its western side; and a colonnaded Dalan with a room attached to it on the southern side. It is thus a large complex entirely built of white marble. It has deep niches on the walls, to break the monotony. Dados have repetitive stylized inlaid creepers on borders and carved natural plants in the centre. Pillars, Brackets and Lintels also bear exquisitely inlaid designs and it is one of the most profusely ornamented buildings of Shah Jehan. This palace was directly connected to the Diwan-I-Khas, Shish-Mahal, Khas-Mahal and other palaces. And it was from here that the Mughal emperor governed the whole country. The Taj Mahal is in full view from this tower and Shah Jehan spent eight years of his imprisonment (1658-66) in this complex, and he died here. His body was taken by boat to the Taj Mahal and buried.

